उत्पीड़ित शोषित वर्गो के उत्थान से संबंधित गॉधी अम्बेडकर और काशी राम के विचारो का तुलनात्मक अध्ययन

दिलेन्द्र मांझी

भारत के दलित आंदोलन के संदर्भ में डॉ अम्बेडकर की भूमिका के कई रूप दृष्टिगोचर होना है। डॉ अम्बेडकर को सन् 1916 में कोलंबिया विश्वविद्यालय न्यूयॉर्क के शोध छात्र थे तभी उन्हें हम भारत में जातिप्रथा के एक गंभीर अध्येता के रूप मे पाते है। 9 मई 1916 को गोल्डन वाइजर ने कोलंबिया विश्वविद्यालय में विज्ञान पर गोष्ठी आयोजित की और अम्बेडकर को भारत में जातिप्रथा के अधार पर जाति तंत्र की प्रकृति पर प्रकाश डाला और जाति विज्ञान के विद्वानों के विचारों का उदाहरण देते हुए जातिं को परिभाषित किया, जाति प्रथा के प्रचलन की मान्यताओं की व्यास्था की उनका यह प्रबंध एक वर्ष उपरांत रॉयल एशियाटिक सोसाइटी बंबई की शोध पत्रिका इंडियन एंटीकवेरी के मई 1917 के अंक में प्रकाशित हुआ ''नवम्बर 1917 में बंबई में दलित जातियों के दो अधिवेशन हुए, एक सम्मेलन में एक प्रस्ताव के जरिए यह मॉग की गई कि सरकार अछुतों के हितों की रक्षा करे और इसके लिए उनकी जनसंख्या के अनुपात के अनुसार विधानसभाओं में दलित जातियों को अपने प्रतिनिधि निर्वाक्षित करने का अधिकार प्रदान करें।